17.04.2020

अनुभूति

शोषण से शिक्षा की ओर

August 28, 2018

टी.एस.इलियट का निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

—

Thomas Stearns Eliot. 1888 – 1965 (26 सितम्बर) (4 जनवरी लन्दन में)

टी.एस.इलियट का निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

परिचय:- जन्म 1888 अमेरिका, 1910 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय से एम.ए.। संस्कृत और पालि भाषा का अध्ययन।

पुस्तक- दि सेक्रेड वुड,1920,

सेलेक्टेड एसेज 1932,

दि यूज ऑफ पोयट्री एण्ड यूज ऑफ क्रिटिसिज्म 1933आदि।

1948 में नोबेल पुरस्कार

इलियट ने निर्वैयक्तिकता के दो रूप माने हैं। (1) प्राकृतिक (2) विशिष्ट

इलियट के आदर्श आलोचक अरस्तू, रेमंड़ी गोर्मी एजरा पाउण्ड और फ्रांसीसी प्रतीकवादी थे।

निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

पृष्ठभूमि: इस सिद्धांत का प्रतिपादन

रोमैंटिक कवियों की व्यक्तिवादिता के विरोध में

हुआ।इलियट एजरा पाउण्ड के विचारों से काफी

प्रभावित थे। एजरा पाउण्ड की मान्यता थी कि कवि वैज्ञानिक के समान ही निर्वैयक्तिक

और वस्तुनिष्ठ होता है। कवि का कार्य आत्मनिरपेक्ष होता है।इस मत से प्रभावित होकर इलियट अनेकता में एकता बाँधने के लिए परंपरा कोआवश्यक मानते थे, जो वैयक्तिकता का

विरोधी है। वह साहित्य के जीवन्त विकास के लिए परंपरा का योग स्वीकार करते थे, जिसके कारण साहित्य में आत्मनिष्ठ तत्त्व नियंत्रित हो

जाता है और वस्तुनिष्ठ प्रमुख हो जाता है।

निर्वैयक्तिकता: इलियट ने इसका अर्थ कवि के व्यक्तिगत भावों की विशिष्टता का सामान्यीकरण बताया है। तदनुसार कवि अपनी तीव्र संवेदना और ग्रहण क्षमता से अन्य

Scanned with CamScanner

अधीन (ग्रहण)

लोगों की अनुभूतियों को आयत्त कर लेता है, पर वे आयत्त अनुभूतियां उसकी निजी अनुभूतियां हो जाती हैं। जब वह अपने स्वयुक्त अथवा चिंतन द्वारा आयत्त अनुभवों को काव्य में व्यक्त

करता है तो वे उसके निजी अनुभव होते हुए भी

सबके अनुभव बन जाते हैं।

(तत्व)

कविता के घटक- तत्त्व, विचार, अनुभूति, अनुभव, बिम्ब,

बनानेवाले

प्रतीक आदि सब व्यक्ति के निजी या वैयक्तिक होते हैं। कलाकार जब अपनी तीव्र संवेदना और ग्रहण शक्ति के माध्यम से अपने अनुभवों को काव्य रूप मेंप्रकट करता है, तो वे व्यक्तिगत होते हुए भीसबके लिए अर्थात् सामान्य (सार्वजन्य) बनजाते हैं। कवि उनके भार से मुक्त हो जाता है या

कहिए कि ये तत्त्व कवि की वैयक्तिकता से

बहुत दूर चले जाते हैं या कहिए कि निर्वैयक्तिक होजाते हैं। भाव ही नहीं कविता के माध्यम से कवि

अपनी वैयक्तिक सीमाओं से भी मुक्त हो

जाता है, उसका स्वर एक व्यक्ति का स्वर न रहकरविश्वमानव का सर्वजनीन स्वर बन जाता है। उदाहरण के लिए कई तत्त्वों से चटनी बनती है

पर चटनी तैयार होने पर सभी तत्त्व अपने

स्वाद से मुक्त हो जाते हैं।

इलियट कि यह निश्चित मान्यता है कि

कला में अभिव्यक्त भाव निर्वैक्तिक होते हैं ओर कवि अपने को प्रकृति के प्रति समर्पित किएबिना निर्वैयक्तिक हो ही नहीं सकता। कविता मनोभावों की स्वच्छंदता नहीं है वरन् उससे

Scanned with CamScanner

पलायन है। वह व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहींअपितु

व्यक्तित्व से पलायन है। किंतु निश्चय ही
जिनमें व्यक्तित्व और भाव हैं, वे ही यह जानसकते हैं कि उनमें मुक्ति की आकांक्षा का

अर्थ क्या होता है। कवि व्यक्तिगत की अभिव्यक्ति नहीं करता, वरन् वह विशिष्ट माध्यम मात्र है

उनके प्रारंभिक वक्तव्यों से स्पष्ट है कि

कविता उत्पन्न हो जाती है, उत्पन्न की नहींजाती। इलियट ने कविता की उत्पत्ति को लेकर

बाद में अपने मत में संशोधन करते हुए कहा कि- मैं उस समय अपनी बात ठीक से व्यक्त नहींकर सका था।
बाद में निर्वैयक्तिकता के संबंध में यह वक्तव्य दिया कि- निर्वैयक्तिकता के दो रूप
होते हैं- एक वह जो कुशल शिल्पी मात्र के लिए

(1) प्राकृतिक
(2) विशिष्ट

प्राकृतिक होती है और दूसरी वह जो प्रौढ़

कलाकार के द्वारा अधिकाधिक उपलब्ध होजाती है। दूसरे प्रकार की निर्वैक्तिकता उस प्रौढ़

कवि की होती है जो अपने उत्कट और

व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से सामान्य

सत्य को व्यक्त करने में समर्थ होता है।

इलियट ने कवि के मन की तुलना प्लेटिनम

के तार से की। जैसे ऑक्सीजन और सल्फरडाईआक्साइड प्लेटिनम के संपर्क मेंआकर सल्फ्यूरिस एसिड बन जाता है किंतु इस सल्फ्यूरिस एसिड में प्लेटिनम का कोई भी चिह्न दिखाई नहीं देता। प्लेटिनम का तार भी पूर्णतः अप्रभावित रहता है।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार कवि के मन के संपर्क में अनेक प्रकार के संवेदन, अनुभूतियां और भाव आते हैं और नए-नए रूप ग्रहण करते रहते हैं किंतु प्रौढ़ कवि का मन अप्रभावित

रहता है। वस्तुतः रचनाकार जितना प्रौढ़ और

परिपक्व होगा, उसमें भोक्ता और स्रष्टा व्यक्तित्व का अंतर उतना ही स्पष्ट होगा।

पाश्चात्य जगत उक्त धारणाओं से अचंभित होकर इन्हें हास्यापद एवं

स्वतोव्याघात दोष से युक्त भी घोषित किया। पश्चिमी साहित्य चिंतन स्तर के अनुसार ऐसा होना

स्वाभाविक भी था क्योंकि इस सिद्धांत को वही व्यक्ति गहराई से समझ सकता है जिसने

भारतीय आचार्य भट्टनायक के साधारणी

करणएवं अभिनवगुप्त के अभिव्यक्तिवाद का अनुशीलन किया है। रस सिद्धांत के अंतर्गत जो बात साधारणीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत कही गई है वही बात निर्वैक्तिकता के सिद्धांत केअंतर्गत कही गई है। साधारणीकरण की अवधारणा के अनुसार कवि के भाव एक

व्यक्ति के भाव नहीं रहते अपितु वे सर्वसाधारण याजनमानस के भावों में परिणत हो जाते हैं,

इसीलिए कविता को प्रेम या विरह, सुख या दुख, हर्ष या विषाद, हास्य या रुदन

सर्वसाधारण के सुख-दुख एवं हास्य-रुदन में परिणत हो जाता है। यदि हम इलियट की शब्दावली में कहें तो

कवि के भाव निर्वैयक्तिक हो जाते हैं।

साधारणीकरण या निर्वैयक्तिकता की खोज भारतीय आचार्यों ने 8-9वीं सदी में

कर ली थी, उसी की खोज पाश्चात्य में इलियट के द्वारा 20वीं सदी में हुई।

Scanned with CamScanner

Share

COMMENTS इलियट की आलोचना रिचर्ड्स की आलोचना की भाँति केवल पाठक तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह सर्जक और पाठक दोनों के लिए है। इलियट की आलोचना का मुख्य उद्देश्य - अपनी कविता के बोध, आस्वाद और परिसंस्कार की भूमि तैयार करना है।

Enter your comment...

19वीं शताब्दी के आरम्भ में वर्डसवर्थ, कालरिज, शैली आदि ने जिस आलोचना का सूत्रपात किया उसमें कवि की वैयक्तिकता, भावना और कल्पना का प्राधान्य था। मैथ्यू आर्नल्ड ने वैयक्तिकता के अतिरेक को अवैयक्तिकता से संतुलित करने का प्रयास किया। किन्तु साहित्य से अधिक

POPULAR POSTS

संस्कृति की ओर और काव्य से अधिक धर्म की ओर उन्मुख रहने के कारण उन्हें सफलता नहीं मिल पाई।

प्रथम स्वर	द्वितीय स्वर	तृतीय स्वर
कवि स्वयं से बात करता है।	कवि श्रोता से बात करता है।	कवि स्वयं से न बोध कर पात्रों के माध्यम से बोलता है।
कवि का लक्ष्य अपने भार से मुक्त होना है क्योंकि बिना कहे वह रह नहीं सकता।	कविता किसी सामाजिक उद्देश्य के लिए की जाती है, जैसे मनोरंजक, उपदेशात्मक, व्यंग्यात्मक आदि।	नाटक आदि इसी श्रेणी में आते हैं।
कविता कवि की अचेत अवस्था से उद्भूत होता है।	कविताओं में कवि पूर्ण सजग व्यक्तित्व से कृति का निर्माण करता है।	कविताओं में कवि पूर्ण सजग व्यक्तित्व से कृति का निर्माण करता है।

Share Post a Comment

भावों का सामान्यीकरण हो जाता है।
अनेकता को एकता के सूत्र में बाँधता है।
वस्तुनिष्ठ साहित्य को महत्व दिया।

Powered by Blogger

Theme images by Mike Burke

Archive

Scanned with CamScanner